

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, लूका-प्रेरितों का धर्मशास्त्र, सत्र 9, लूका में कलीसिया, भाग 2, मार्शल, खोए हुए को बचाने के लिए

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, रॉबर्ट ए. पीटरसन, ल्यूक में चर्च, ईश्वर के नए नियम के लोग, भाग 2, और मैं. हॉवर्ड मार्शल, खोए हुए लोगों को बचाने के लिए।

हम ल्यूक के सुसमाचार के साथ धर्मशास्त्र में ल्यूक के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं, विशेष रूप से ल्यूक के सुसमाचार में चर्च या ईश्वर के लोगों पर मेरे व्याख्यान, है न? प्रेरितों के काम में नहीं। यह बाद में आएगा, भगवान की इच्छा से।

सिक्के के दृष्टांत के बाद, हम उड़ाऊ या खोए हुए बेटे के दृष्टांत को पढ़ते हैं। और यीशु ने कहा, एक आदमी था जिसके दो बेटे थे, और उनमें से छोटे ने अपने पिता से कहा, पिता, मुझे संपत्ति का वह हिस्सा दे दो जो मुझे मिलना चाहिए।

और उसने अपनी संपत्ति उन दोनों के बीच बांट दी। कुछ ही दिनों बाद, छोटे बेटे ने अपनी सारी संपत्ति इकट्ठी की और एक दूर देश की यात्रा पर निकल पड़ा। और वहाँ उसने अपनी संपत्ति को लापरवाही से जीने में बरबाद कर दिया।

और जब उसने सब कुछ खर्च कर दिया, तो उस देश में भयंकर अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। इसलिए, वह उस देश के एक नागरिक के पास मजदूरी करने चला गया, जिसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा। और वह सूअरों द्वारा खाए जाने वाले फलियों से अपना पेट भरने के लिए तरस रहा था, लेकिन किसी ने उसे कुछ नहीं दिया।

लेकिन जब वह अपने होश में आया, तो उसने कहा, "मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को पेट भर खाना मिलता है, लेकिन मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा। मैं अपने पिता से कहूँगा, उससे कहूँगा, पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, और अब मैं आपके सामने आपका पुत्र कहलाने के योग्य नहीं रहा।"

मुझे अपने एक मजदूर के समान समझो। तब वह उठकर अपने पिता के पास गया। पर अभी वह दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और चूमा।

बेटे ने उससे कहा, 'पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, और अब मैं आपके सामने आपका बेटा कहलाने के योग्य नहीं रहा। लेकिन पिता ने नौकरों से कहा, जल्दी से अच्छे से अच्छा कपड़ा लाओ और उसे पहनाओ और उसके हाथ में अंगूठी और पैरों में जूते पहनाओ और मोटा-ताजा बछड़ा लाकर मारो और उसे खाने दो और हम खाएँ और खुशियाँ मनाएँ। क्योंकि मेरा बेटा मर गया था और फिर से ज़िंदा हो गया है।

वह खो गया था और मिल गया। और वे जश्न मनाने लगे। अब उसका बड़ा भाई, उसका बड़ा बेटा खेत में था।

जब वह घर के पास पहुंचा, तो उसने गाने-बजाने और नाचने का शोर सुना। तब उसने एक सेवक को बुलाकर पूछा कि ये सब क्या हो रहा है। उसने कहा, “तुम्हारा भाई आया है, और तुम्हारे पिता ने एक मोटा बछड़ा कटवाया है, क्योंकि वह उसे सुरक्षित और स्वस्थ पाकर लौटा है।”

लेकिन वह क्रोधित हो गया और अंदर जाने से इनकार कर दिया। उसके पिता ने बाहर आकर उसका इलाज किया। लेकिन उसने अपने पिता से कहा, देखिये, इतने सालों से मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ, और मैंने कभी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया।

तूने मुझे कभी बकरी का बच्चा भी नहीं दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाऊँ। और जब तेरा बेटा आया, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी, तो तूने उसके लिये मोटा बछड़ा कटवाया। उन्होंने उससे कहा, बेटा, तू सदैव मेरे साथ है, और जो कुछ मेरा है, वह सब तेरा है।

इसके लिए जश्न मनाना और खुश होना उचित था। तुम्हारा भाई मर गया था और जीवित है। वह खो गया था और मिल गया है।

ल्यूक 15 में खोई हुई वस्तुओं या व्यक्तियों से संबंधित तीन दृष्टांत हैं: एक खोई हुई भेड़, श्लोक चार से सात; एक खोया हुआ सिक्का, श्लोक आठ से 10 तक; और एक खोया हुआ बेटा, श्लोक 11 से 32 तक। दो बार, खोया हुआ शब्द बेटे के लिए प्रयोग किया जाता है। वह खो गया था और श्लोक 34 और अंतिम श्लोक 32 में भी पाया जाता है।

परिचयात्मक छंद दृष्टान्तों के लिए मंच तैयार करते हैं। ये तीन दृष्टांत - कर संग्रहकर्ता और पापी - यीशु को सुनना चाहते थे, लेकिन फरीसियों और शास्त्रियों ने पद एक और दो में पापियों के साथ यीशु की मित्रता के बारे में खुद से शिकायत की। जैसे ही अध्याय खुलता है, यीशु पापियों के साथ अपनी संगति को उचित ठहराने के लिए दृष्टांत बताते हैं।

ऐसा करते हुए, वह श्लोक एक और दो में प्रस्तुत दो समूहों को संबोधित करेंगे। 100 भेड़ों का एक चरवाहा एक खो देता है। वह 99 को छोड़ देता है और खोई हुई भेड़ को तब तक खोजता है जब तक वह मिल नहीं जाती।

दृष्टांत में खोई हुई चीज़ को पाने पर खुशी मनाई जाती है। चरवाहा खुशी-खुशी अपनी खोई हुई भेड़ को अपने कंधों पर उठाकर घर ले जाता है, श्लोक पाँच और छः। वह अपने पड़ोसियों को भी अपनी खोई हुई भेड़ पर खुशी मनाने के लिए आमंत्रित करता है, श्लोक छः।

यीशु कहते हैं कि स्वर्ग में एक पापी के पश्चाताप करने पर उन 99 धर्मी लोगों से ज़्यादा खुशी मनाई जाएगी जिन्हें पश्चाताप करने की ज़रूरत नहीं है। इस दृष्टांत के ज़रिए, यीशु कर वसूलने वालों और पापियों को पश्चाताप करने के लिए बुला रहे हैं, जबकि उन आत्म-धर्मी फरीसियों और शास्त्रियों को फटकार रहे हैं जो सोचते हैं कि उन्हें पश्चाताप करने की ज़रूरत नहीं है। यीशु का

संदेश उस महिला के लिए भी वही है जो अपना खोया हुआ सिक्का ढूँढ़ रही है और उसे पा भी रही है।

इसे खोजने के बाद, वह दोस्तों को एक पार्टी में बुलाती है और उनसे कहती है कि वे उसके साथ आनंद मनाएँ, श्लोक नौ। फिर से, यीशु ने बात कही, उद्धरण, उसी तरह, मैं आपको बताता हूँ कि पश्चाताप करने वाले एक पापी पर भगवान के स्वर्गदूतों की उपस्थिति में खुशी मनाई जाती है, पद 10। पाठकों ने पार्टी के लिए निर्धारित राशि से अधिक खर्च करने के लिए महिला की आलोचना की है सिक्के का मूल्य था।

एडवर्ड्स इस धारणा को सही करते हैं। जेम्स एडवर्ड्स, द गॉस्पेल अकॉर्डिंग टु ल्यूक, पृष्ठ 437, "यह दृष्टान्त अर्थशास्त्र के बारे में नहीं है, तथापि, यह ईश्वर की कृपा के बारे में है, शायद ईश्वर की कृपा की मूर्खता जो खोई हुई चीजों को तब तक ढूँढ़ती है जब तक कि वे मिल न जाएँ और एक बार मिल जाने पर, उनकी पुनर्प्राप्ति का जश्न मनाती है छोड़ देना। ईश्वर के आनंद की कोई कीमत नहीं है। एक बड़ी खाई, कोष्ठक में 16:26 विस्मयादिबोधक बिंदु, इस बिंदु पर फरीसियों और परमेश्वर के राज्य के बीच एक बड़ी खाई है। वे शिकायत करते हैं जब यीशु कई पापियों और कर वसूलने वालों के साथ भोजन करते हैं, फिर भी जब उनमें से एक पश्चाताप करता है तो सारा स्वर्ग आनन्दित होता है।

मार्शल सही है, "पहले दो दृष्टान्तों के प्रयोग से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी खुशी ईश्वर द्वारा महसूस की गई खुशी का प्रतिबिंब है जब वह अपनी खोई हुई चीज़ को वापस पा लेता है।" ल्यूक पर मार्शल की टिप्पणी, पृष्ठ 597।

इस प्रकार यीशु पश्चातापी पापियों के प्रति परमेश्वर के रवैये और यहूदी नेताओं के रवैये के बीच एक बड़े अंतर की ओर इशारा करते हैं। जब हम एक दृष्टान्त से दूसरे दृष्टान्त की ओर बढ़ते हैं तो खोई हुई वस्तु या व्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। खोई हुई भेड़ सौ में से केवल एक थी।

खोया हुआ सिक्का दस में से एक था। खोया हुआ बेटा सिर्फ़ दो में से एक था। इस प्रकार इन दृष्टान्तों में खोई हुई चीज़ का मूल्य बढ़ जाता है।

यीशु खोए हुए बेटे के दृष्टान्त की शुरुआत तीन पात्रों से करते हैं: एक आदमी और उसके दो बेटे। छोटा बेटा अपनी विरासत जल्दी मांगकर अपने पिता का अपमान करता है। पिता अपने बेटे के अनुरोध को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करता है, और लड़का चला जाता है, श्लोक 12।

इसके तुरंत बाद उसने अपनी संपत्ति इकट्ठी की और एक दूर देश की यात्रा पर निकल पड़ा और वहाँ उसने अपनी संपत्ति को लापरवाही से जीने में बर्बाद कर दिया। लड़के की दुर्दशा इसलिए और भी बदतर हो गई क्योंकि न केवल उसने अपना सब कुछ खर्च कर दिया था बल्कि उस देश में भयंकर अकाल भी पड़ गया था, श्लोक 15। हताश होकर छोटे बेटे ने एक ऐसे व्यक्ति के यहाँ सूअर चराने का काम कर लिया जो सूअरों का मालिक था।

लेकिन लड़के ने खुद को भूखा, पैसे से वंचित और दोस्तों के बिना पाया। जब उसने स्थिति के बारे में सोचा, तो उसे एहसास हुआ कि उसके पिता के मज़दूरों के पास बहुत कुछ था, और उसके

पास कुछ नहीं था। इसलिए उसने घर जाने, अपने पिता से माफ़ी मांगने और मज़दूर के रूप में नौकरी मांगने का फैसला किया, श्लोक 17 और 19।

उसने अपना भाषण दोहराया। पिता जी, मैंने स्वर्ग और आपके विरुद्ध पाप किया है। मैं अब आपका पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ।

मुझे अपने एक मजदूर के समान समझो, श्लोक 18 और 19। तब वह अपने पिता के पास लौट गया। परन्तु पिता ने उसे दूर से देखकर दया से भर गया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और चूमा।

लौटते हुए बेटे ने अपना पूर्वाभ्यास किया हुआ भाषण शुरू किया, लेकिन उसे पूरा नहीं कर पाया। क्योंकि पिता ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे उसके बेटे के लिए वस्त्र, अंगूठी और चप्पल लेकर आएँ और घोषणा करें कि दावत होगी, श्लोक 21 से 23। पिता के शब्द यादगार हैं।

चलो खाना खाएँ और जश्न मनाएँ। इसके लिए मेरा बेटा मर गया था और ज़िंदा है। वह खो गया था और मिल गया है।

पिता ने एक मोटा बछड़ा काटने का आदेश भी दिया और जश्न शुरू हो गया। हालाँकि, उड़ाऊ बेटे की वापसी पर हर कोई खुश नहीं था। क्योंकि बड़े भाई की इस खबर पर बहुत अलग प्रतिक्रिया थी।

जब उसने संगीत और नृत्य सुना तो उसने उनका अर्थ पूछा और उसे बताया गया कि उसका भाई घर आया था और तुम्हारे पिता ने मोटे बछड़े को मार डाला है क्योंकि उन्होंने उसे सुरक्षित और स्वस्थ वापस ले लिया है। श्लोक 25 से 27. बड़ा बेटा नाराज था और पार्टी में शामिल नहीं हुआ।

उसके दयालु पिता ने उससे ऐसा करने का अनुरोध किया। बेटे ने फिर भी मना कर दिया और शिकायत कर दी। वह कई वर्षों से अपने पिता की गुलामी कर रहा था और उसे कभी अपने दोस्तों के साथ जश्न मनाने के लिए एक बकरी भी नहीं दी गई थी, एक मोटा बछड़ा तो दूर की बात है।

लेकिन क्रोधित बेटे ने कहा कि पिता ने अपने छोटे बेटे के साथ ठीक यही किया, जिसने अपना पैसा वेश्याओं में उड़ा दिया। पिता ने उन कठोर शब्दों का धीरे से उत्तर दिया। बेटा, तुम हमेशा मेरे साथ हो, और जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है।

यह जश्न मनाना और खुश होना उचित था कि आपका भाई मर गया था और जीवित है। वह खो गया था और मिल गया है। श्लोक 31 से 32.

हम तीन दृष्टांतों, खास तौर पर आखिरी दृष्टांत से परमेश्वर के अनुग्रह और नए नियम के परमेश्वर के लोगों के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। लूका चाहता है कि हम तीनों दृष्टांतों को आयत 1 और 2 में दिए गए अवसर को ध्यान में रखते हुए पढ़ें। उड़ाऊ पुत्र कर संग्रहकर्ताओं और पापियों का प्रतिनिधित्व करता है और बड़ा भाई फरीसी और शास्त्रियों का प्रतिनिधित्व करता है। स्वर्ग खोए

हुए लोगों, जिनमें कर संग्रहकर्ता और पापी भी शामिल हैं, के मिल जाने पर आनन्दित होता है और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

जैसे फरीसी और शास्त्री यीशु के भोजन के लिए चुने गए विकल्पों के बारे में शिकायत करते थे, वैसे ही बड़े भाई ने अपने उड़ाऊ भाई के लिए आयोजित की गई पार्टी के बारे में शिकायत की जो घर आया था। ग्रीन द्वारा इन मामलों पर किया गया विचार उद्घरण योग्य है। ल्यूक पर जोएल ग्रीन की टिप्पणी।

यीशु के वचनों के करीब आने वालों के प्रति उनकी ग्रहणशीलता के लिए दोषी ठहराए जाने पर, यीशु खोए हुए लोगों की पुनः प्राप्ति के लिए हर्षपूर्ण प्रतिक्रियाओं की दिव्य आवश्यकता पर जोर देते हुए जवाब देते हैं। दृष्टांत में पिता की तरह, वह खोए हुए लोगों को भोजन की संगति में शामिल करने के महत्व को पहचानता है, जो पुनः प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिनकी स्थिति टोल कलेक्टर और पापी होने के कारण उन्हें अस्वीकार्य भोजन साथी बनाती है। शास्त्रियों और फरीसियों को दृष्टांत में खुद को बड़े बेटे के रूप में दर्शाए जाने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जो जिम्मेदार और आज्ञाकारी प्रतीत होते हैं, लेकिन भगवान के उद्धारक उद्देश्य के साथ उनकी एकजुटता में विफल होते हैं।

इसके अलावा, एक पापी महिला द्वारा यीशु का अभिषेक करने की कहानी में, जैसा कि उस कहानी में है, इसलिए यह दृष्टांत खुला हुआ है। बॉक सही है। ल्यूक कमेंटरी खंड 1, पृष्ठ 1320।

"कहानी हमें उलझन में छोड़ देती है, क्योंकि हमें यह नहीं बताया गया है कि बड़ा भाई क्या करता है। दृष्टांत इसलिए छोड़ा गया है ताकि लूका के पाठक उचित प्रतिक्रिया पर विचार कर सकें। अगर वे भाई की जगह होते, तो क्या वे अंदर जाते? क्या वे खुशी में हिस्सा लेते? क्या वे खोए हुए लोगों को ईश्वर को खोजने में मदद करने के अवसर में शामिल होते? पापियों को खोजने की यीशु की चुनौती का जवाब कैसे देना है, यह चुनना होगा।"

प्रकरण संख्या छह लूका 19:1 से 10 तक है। नए नियम में परमेश्वर के लोग वे हैं जिन्हें यीशु बचाता है। यीशु यरीहो में प्रवेश कर रहा था और वहाँ से गुजर रहा था।

और देखो, जक्कई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और धनी था। और वह यह देखना चाहता था कि यीशु कौन है।

परन्तु भीड़ के कारण वह न जा सका, क्योंकि वह छोटा था। सो वह उसके आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, कि उसे देखे, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था। जब यीशु उस जगह आया, तो उसने ऊपर देखकर उससे कहा, हे जक्कई, जल्दी से नीचे उतर आ; क्योंकि मुझे आज तेरे घर में रहना अवश्य है।

सो वह तुरन्त नीचे आया और आनन्द से उसका स्वागत किया। और यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाने लगे। वह एक पापी मनुष्य के यहां अतिथि होने गया है।

और जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, देख, प्रभु, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ। और यदि किसी का कुछ भी ठगा हो तो उसे चौगुना फेर देता हूँ। तब यीशु ने उससे कहा, आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।

क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए लोगों को ढूँढ़ने और बचाने आया है। पिछले प्रकरण की शुरुआत में, जिसमें यीशु ने एक अंधे भिखारी को चंगा किया था, वह यरीहो के पास पहुँचा, लूका 18, 35। इस पेरिकोप में, उसे उसी शहर से होकर गुज़रने के लिए लाया गया, 19:1। इस तरह की हलचल यीशु की यात्रा की विशेषता है, लूका की यात्रा की कहानी जो यीशु को यरूशलेम ले जाती है और उसकी प्रायश्चित मृत्यु और पुनरुत्थान।

इस यात्रा के दौरान, यीशु अपने शिष्यों को कई सबक सिखाते हैं। तुरंत, जक्कई को एक आदमी, एक प्रमुख कर संग्रहकर्ता और एक अमीर आदमी के रूप में पेश किया जाता है। पद 2. यहूदियों ने कर संग्रहकर्ताओं की निंदा की, जिन्हें वे रोम के बेईमान एजेंट मानते थे।

इस संदर्भ को छोड़कर मुख्य कर संग्रहकर्ता के रूप में जक्कई की स्थिति अज्ञात है। संभवतः, वह रोम में उसके लिए काम करने वाले अन्य लोगों से ऊपर था। सामान्य तौर पर, कर संग्रहकर्ता आर्थिक रूप से अच्छा करते थे, और जक्कई अपनी नेतृत्वकारी भूमिका के कारण दूसरों से बेहतर था।

जक्कई का कद छोटा था और वह यीशु को देखना चाहता था, लेकिन भीड़ इकट्ठा होने के कारण वह ऐसा नहीं कर सका। वह इतना साधन संपन्न था, वह आगे भागा और एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया जो यीशु के रास्ते में था। ग्रीन दिखाता है कि जक्कई एक खोजी व्यक्ति था, क्योंकि उसने अपने वयस्क पुरुष होने और समुदाय में एक धनी व्यक्ति की स्थिति के बावजूद पेड़ पर चढ़ने की संभावित शर्मिंदगी को सहन किया।

ग्रीन, ल्यूक का सुसमाचार 669. जक्कई यीशु को देखने के लिए दृढ़ था, और वह सफल हुआ, फिर भी उसकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक। क्योंकि जब यीशु निकट आया, तो उसने जक्कई को पेड़ पर देखा और उससे कहा, जल्दी से नीचे आ जाओ, क्योंकि यीशु को उतरना ही होगा। हम ल्यूक के सुसमाचार में उस शब्द से बहुत परिचित हैं, उसके घर पर अवश्य रहना चाहिए।

पद 5. जक्कई ने तत्परता से उतरकर उसका स्वागत किया, पद 6. एक ज्ञात पापी के साथ आतिथ्य साझा करने की यीशु की इच्छा भीड़ की शिकायत को आकर्षित करती है, पद 7. तिरस्कृत लोगों को गले लगाने के लिए यीशु की पिछली प्रतिक्रियाओं के समान। 5.30.15.2. मत्ती 9.6.7. प्रभु ने कहा, 11. जक्कई के अगले शब्द असाधारण हैं।

उसे प्रभु कहते हुए, जक्कई ने सार्वजनिक रूप से कबूल किया, क्षमा करें, हे प्रभु, मैं अपनी आधी संपत्ति गरीबों को देता हूँ, और अगर मैंने किसी को कुछ भी धोखा दिया है, तो मैं उसे चार गुना वापस करता हूँ। ल्यूक 19.8। बाख हमें सूचित करता है कि सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जक्कई के वादे की सीमा को दर्शाती है। यहूदी धर्म में, अपनी संपत्ति का 20% दान करना उदारता माना जाता था।

जबरन वसूली के लिए कानूनी प्रतिपूर्ति 20% थी। लैव्यव्यवस्था 5:16। संख्या 5:7। लेकिन जक्कई ने मूसा के कानून द्वारा चोर-उचक्कों पर लगाए गए कठोर दोहरे दंड को स्वीकार किया, निर्गमन 22:1 और 21:37। इस दायित्व को लेकर, जक्कई ने डैरेल बॉक की भाषा का उपयोग करते हुए, अर्ल एलिस, द गॉस्पेल ऑफ ल्यूक, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 221 को उद्धृत करते हुए, एक बदले हुए हृदय की अभिव्यक्ति के रूप में धन्यवाद भेंट को दर्शाया है। एक अमीर शासक की प्रतिक्रिया के मुकाबले जक्कई के शब्द और भी प्रभावशाली हैं।

जब यीशु ने उस धनी शासक से कहा कि वह अपनी संपत्ति बेच दे, और उससे प्राप्त धन को गरीबों में बाँट दे, और यीशु का अनुसरण करे। यह सुनने के बाद, वह बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह बहुत धनी था, लूका 18:23। यदि हमें जक्कई की उद्धार की ईमानदारी के बारे में कोई संदेह है, तो यीशु के शब्द उन्हें दूर कर देते हैं। आज उद्धार इस घर में आया है, क्योंकि वह भी अब्राहम का पुत्र है।

पद 9. जक्कई का संकल्प यीशु के संसार में आने के उद्देश्य की पूर्ति को दर्शाता है, जो कि अगले ही पद, पद 10 में दिया गया है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को ढूँढ़ने और बचाने आया है। हमने देखा है कि उस पद को बार-बार दोहराया गया है और कई विद्वानों ने इसे लूका के सुसमाचार के नारे, आदर्श वाक्य के रूप में माना है।

उदाहरण के लिए, मैं, हॉवर्ड मार्शल, इस श्लोक को तीसरे सुसमाचार का आदर्श वाक्य मानता हूँ। "लूका के लेखन में केंद्रीय विषय यह है कि यीशु मनुष्यों को उद्धार प्रदान करता है। अगर हम सुसमाचार के संदेश को सारांशित करने के लिए कोई पाठ ढूँढ़ रहे हैं, तो वह निस्संदेह लूका 19:10 होगा। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को बचाने आया है।" मार्शल, लूका, इतिहासकार और धर्मशास्त्री, पृष्ठ 116।

यह अंश नए नियम के परमेश्वर के लोगों को समझने में हमारी सहायता करता है, क्योंकि यह लूका के इंजील सार्वभौमिकता पर जोर देता है। यीशु बचाने के लिए आया था, और वह सभी को बचाने आया था, यहाँ तक कि समाज के हाशिये पर रहने वालों को भी।

लूका ने गरीबों, बीमारों और सम्मानित लोगों द्वारा पापी समझे जाने वाले लोगों को बचाने के लिए यीशु की विशेष चिंता को दर्शाया है, साथ ही बच्चों और कर संग्रहकर्ताओं को भी बचाया है। लूका में यीशु ने चर्च के उदाहरण संख्या 7 को देखा, और वह लूका 24:44-49 है। शिष्यों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि यीशु भूत नहीं है, भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा खाने के बाद, उसने उनसे कहा, ये मेरे शब्द हैं जो मैंने तुमसे तब कहे थे जब मैं तुम्हारे साथ था, कि मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में मेरे बारे में जो कुछ लिखा है, वह सब पूरा होना चाहिए।

फिर उसने पवित्रशास्त्र को समझने के लिए उनके मन खोले और उनसे कहा, ऐसा लिखा है कि मसीह को दुख उठाना चाहिए और तीसरे दिन मरे हुआओं में से जी उठना चाहिए, और उसके नाम से पश्चाताप और पापों की क्षमा का प्रचार यरूशलेम से शुरू करके सभी राष्ट्रों में किया जाना चाहिए। तुम इन बातों के गवाह हो और देखो, मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा को तुम पर उतार रहा हूँ, लेकिन जब तक तुम ऊपर से सामर्थ्य से सुसज्जित न हो जाओ, तब तक शहर में रहो। जी उठे

हुए मसीह अपने शिष्यों को दिखाई दिए, जिसके परिणामस्वरूप, वे चौंक गए और डर गए और उन्हें लगा कि वे एक भूत देख रहे हैं।

लूका 24:37. यीशु ने अपने हाथ और पाँव के निशान दिखाकर उन्हें भरोसा दिलाया कि यह वही है। और जब वे आनन्द के मारे अविश्वासी और अचम्भा कर रहे थे, तो उसने उनसे पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कुछ खाने को है?” उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। उसने उसे लेकर उनके सामने खाया।

इससे उन्हें पता चला कि वह कोई भूत नहीं था बल्कि उनका क्रूस पर चढ़ाया हुआ और पुनर्जीवित भगवान था। ल्यूक 24 के छंद 42 और 43। फिर यीशु ने अपनी पिछली भविष्यवाणियों के प्रकाश में शिष्यों के सामने अपनी उपस्थिति की व्याख्या की।

वह जीवित है क्योंकि पद 44, मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में मेरे विषय में जो कुछ लिखा है, वह सब पूरा होना अवश्य है। यहां हम फिर से ल्यूक के ईश्वरीय योजना के अनुसार होने वाली घटनाओं के विषय का सामना करते हैं। यह ल्यूक अधिनियमों का एक प्रमुख विषय है।

तब यीशु ने शिष्यों को प्रकाश दिया ताकि वे धर्मग्रंथों को समझ सकें, विशेष रूप से उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करने वाले धर्मग्रंथों को। छंद 45 और 46। लेकिन उनके शब्द यहीं नहीं रुके, क्योंकि पुराने नियम में और भी अधिक भविष्यवाणी की गई थी।

यहां ल्यूक के सुसमाचार के अंत में, यीशु ने खुले तौर पर उस बात का खुलासा किया जिसका उन्होंने पहले संकेत दिया था, और यह कि यरूशलेम से शुरू करके सभी देशों में उनके नाम पर पश्चाताप और पापों की क्षमा की घोषणा की जानी चाहिए। यीशु का इरादा दुनिया भर में सुसमाचार पहुंचाने का है। शिष्यों ने शायद यीशु के शब्दों को गलत समझा होगा कि खुशखबरी पूरे साम्राज्य में फैले यहूदियों तक पहुंचने वाली है।

लेकिन ल्यूक की दूसरी किताब स्पष्ट करती है कि यीशु का मतलब था कि सुसमाचार अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों तक भी पहुंचे। इसके अलावा, यीशु उन्हें आदेश देते हैं।
श्लोक 48.

वह कहते हैं, आप इन चीजों के गवाह हैं। यह प्रेरितों के काम 2 में पतरस के शब्दों का अनुमान लगाता है, जहां यहूदा के प्रतिस्थापन के लिए योग्यता उन लोगों में से थी जो पूरे समय हमारे साथ रहे, जब प्रभु यीशु हमारे बीच आए और बाहर गए, जॉन के बपतिस्मा से शुरू होकर उस दिन तक जब तक वह ऊपर नहीं उठाया गया। हम से। इनमें से यह आवश्यक है कि कोई हमारे साथ पुनरुत्थान का साक्षी बने।

अधिनियम 2:21 और 22। जेम्स एडवर्ड्स ल्यूक 24 के छंद 46 और 48 के विचार को पकड़ते हैं। “अंतिम आयोग इस प्रकार यरूशलेम समुदाय को प्रेरितिक अधिकार के साथ निवेश करता है और इसे राष्ट्रों के लिए करिश्माई मिशन के लिए नियुक्त करता है।

यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि धर्मग्रंथों में उनके बारे में कहा गया है कि उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और पुनर्जीवित किया गया। फिर उसने उन्हें पश्चात्ताप का शुभ समाचार देने का आदेश दिया जिससे सभी राष्ट्रों को पापों की क्षमा मिल सके।" लूका 24:47.

उन्होंने उन्हें संदेश दिया है. अब वह सशक्तिकरण का एक वादा जोड़ते हैं कि उन्हें सफल प्रचारक बनने की आवश्यकता होगी। और देखो, मैं अपने पिता का वचन तुम पर पूरा कर रहा हूँ, परन्तु जब तक तुम ऊपर से शक्ति प्राप्त न कर लो, तब तक नगर में ही रहो।

श्लोक 49. एक बार फिर, हम निश्चित नहीं हैं कि उस समय उनके शिष्यों ने यीशु के शब्दों को कितना समझा था, लेकिन पन्तेकुस्त के दिन वे निश्चित रूप से समझेंगे। यीशु ने उन्हें सुसमाचार प्रचार के कठिन कार्य में प्रोत्साहित करने के लिए पवित्र आत्मा भेजने का वादा किया।

इसके अलावा, आत्मा न बचाए गए श्रोताओं को भगवान में परिवर्तित करने के लिए काम करेगी। 11 को यरूशलेम में तब तक इंतजार करना था जब तक कि यीशु ने वह वादा नहीं किया जो उसने किया था, जो निस्संदेह, अधिनियम के पहले दो अध्यायों में दिया गया है। हॉवर्ड मार्शल ने मैथ्यू और जॉन के समान विषयों पर पाठ के साथ इस परिच्छेद को सहायक रूप से सहसंबंधित किया है।

ल्यूक पर मार्शल की टिप्पणी, पृष्ठ 903, 904। "इस सामग्री का मैथ्यू 28, 16 से 20, महान आदेश मार्ग और जॉन 20:21 और 23 के साथ संबंध, जहां यीशु शिष्यों पर सांस लेते हैं और उन्हें आत्मा प्राप्त करने के लिए कहते हैं क्योंकि वे सुसमाचार प्रचार करेंगे और लोगों को क्षमा प्रदान करेंगे। इसके और मैथ्यू 28 और जॉन 20 के बीच संबंध स्पष्ट हैं।"

लूका ने मैथ्यू के साथ राष्ट्रों में जाने का आदेश और दिव्य शक्ति का वादा साझा किया। वह जॉन के साथ आत्मा के वादे और पापों की क्षमा के संदर्भ को साझा करता है। इसलिए इस बात पर संदेह नहीं किया जा सकता कि इन विवरणों के पीछे आम परंपराएँ हैं।

मूल बात यह है कि यीशु ने अपने शिष्यों को सुसमाचार को व्यापक रूप से फैलाने और पापों की क्षमा प्रदान करने का आदेश दिया और उन्होंने उन्हें उनके कार्य के लिए दिव्य शक्ति देने का वादा किया। यह उद्धार के संदेश, शिष्यों के आदेश और पवित्र आत्मा की सशक्त उपस्थिति के महत्व को रेखांकित करके लूका के सुसमाचार में परमेश्वर के नए नियम के लोगों के हमारे सर्वेक्षण को समाप्त करने का एक उपयुक्त तरीका है। यह लूका के संदेश की दूसरी किस्त, प्रेरितों की पुस्तक, में जाने का एक उपयुक्त तरीका भी है, जिसमें उन्हीं तीन विषयों का अनुप्रयोग और विस्तार है।

भगवान की इच्छा से, हम अब से कुछ व्याख्यानों में ऐसा करेंगे, लेकिन अब हम लूका के सुसमाचार पर आगे बढ़ना चाहते हैं, इस बार आई. हॉवर्ड मार्शल की बहुत अच्छी पुस्तक, लूका इतिहासकार और धर्मशास्त्री, अध्याय 7, जिसका शीर्षक है खोए हुए लोगों को बचाना। पुस्तक का मुख्य विषय मनुष्यों के लिए उद्धार है। यदि हम संदेश को सारांशित करने के लिए कोई पाठ खोज रहे हैं, तो निस्संदेह वह लूका 19:10 होगा: "मनुष्य का पुत्र खोए हुए लोगों को ढूँढ़ने और बचाने आया है।"

इस आयत के साथ, लूका गलील और यहूदिया में यीशु की सेवकाई की कहानी का समापन करता है। इसके ठीक बाद का भाग, जिसमें पाउंड का दृष्टांत है, लूका 19:11-27, यरूशलेम में प्रवेश की ओर देखता है और नए भाग से संबंधित है, जो पहले की तुलना में यहाँ से शुरू होता है। इसलिए, यीशु का कथन उनके सुसमाचारी मंत्रालय के चरमोत्कर्ष पर है और इसके महत्व को सारांशित करता है।

यीशु बचाने आये। इस विशेषता को मंत्रालय की निर्णायक विशेषता के रूप में उजागर करते हुए, ल्यूक अन्य प्रचारकों की तुलना में कुछ नया कर रहा था। फिर भी, साथ ही, वह सुसमाचार परंपरा पर कोई नया उद्देश्य नहीं थोप रहा था।

मार्क का जोर कुछ अलग है। वर्तमान समय में, मार्क के उद्देश्य और विशेषताओं के संबंध में कई अलग-अलग सिद्धांत हैं, लेकिन हम निश्चित रूप से इसे महत्वपूर्ण मान सकते हैं कि मार्क अपनी पुस्तक की सामग्री के संबंध में सुसमाचार शब्द का उपयोग करता है। वह खुद को एक संदेश प्रस्तुत करने वाला मानता है, जैसे यीशु ने एक संदेश प्रस्तुत किया था, और संदेश की सामग्री इसे प्राप्त करने वालों के लिए अच्छी खबर है।

लेकिन एक बार जब मार्क ने संदेश के आवश्यक तत्वों को संक्षेप में बता दिया तो वह संदेश की सामग्री के बारे में अधिक विस्तार से नहीं बताता है। मरकुस 1:14 और निम्नलिखित। उनकी चिंता यीशु के व्यक्तित्व को लेकर कहीं अधिक प्रतीत होती है।

उनका उद्देश्य यीशु को मसीह और सर्वोच्च रूप से ईश्वर के पुत्र के रूप में चित्रित करना है। सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि आप क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ? मार्क 8.29. साक्ष्य में आंशिक रूप से वह शामिल है जिसे हम गुप्त प्रसंग कहते हैं जिसमें ईसा मसीह का दिव्य अधिकार उन लोगों के सामने प्रकट होता है जिन्हें इसे देखने के लिए आंखें दी गई हैं। इसमें वह शिक्षण भी शामिल है जिसमें यीशु ने खुलासा किया कि उसके कार्य में स्वर्गीय गौरव और विजय प्राप्त करने से पहले पीड़ा सहना शामिल है, और इस प्रकार शिष्यत्व में उसके अनुयायियों की ओर से पीड़ा के उसी मार्ग का पालन करने की तैयारी शामिल है।

यदि एक सामान्यीकरण की अनुमति दी जा सकती है, तो हम शायद कह सकते हैं कि मार्क यीशु के व्यक्तित्व के बारे में बहुत चिंतित है। यह जानना कि यीशु कौन हैं, उनका सुसमाचार है। मैथ्यू के सुसमाचार में अभिव्यक्ति के लिए आए विभिन्न रूपांकनों को संक्षेप में प्रस्तुत करना आसान नहीं है।

दो मुख्य विषय प्रबल हैं। पहला यह कि यीशु पुराने नियम और यहूदी धर्म का वादा किया हुआ मसीहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू का एक प्रमुख उद्देश्य यहूदियों को यह प्रदर्शित करना था कि यीशु मसीहा थे और परिणामस्वरूप चर्च ईश्वर के सच्चे लोग थे।

इसलिए, मैथ्यू, मार्क की अधिकांश सामग्री को दोहराता है और उन विशेषताओं पर जोर देता है जो इंगित करती हैं कि यीशु यहूदी मसीहा हैं। उनका अन्य मुख्य विषय यीशु की शिक्षा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू ने सचेत रूप से यीशु की बातों को एक साथ लाया है और उन्हें विषय वस्तु

के आधार पर व्यवस्थित किया है ताकि यीशु की गतिविधि के बारे में जो प्रभावशाली धारणा दी गई है वह यह है कि वह एक शिक्षक थे जिन्होंने अपने अनुयायियों को काफी व्यवस्थित निर्देश दिए।

इसका मतलब यह नहीं है कि मैथ्यू एक नया विधिवाद प्रस्तुत कर रहा है। बल्कि उसका मानना है कि उद्धार यीशु के शब्दों में निहित है। जॉन के सुसमाचार पर भी संक्षेप में विचार करना उचित है क्योंकि इसके और ल्यूक के बीच कुछ संबंध हैं जो संकेत देते हैं कि दोनों सुसमाचार प्रचारक या कम से कम उनके सुसमाचारों में अंतर्निहित परंपराएँ किसी तरह से संबंधित थीं।

यहाँ, यीशु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जो परमेश्वर को प्रकट करता है और मनुष्यों को परमेश्वर के अनन्त जीवन से अवगत कराता है। अनन्त जीवन की श्रेणी यूहन्ना में मौलिक उद्धारक अवधारणा है, और यीशु को मूल रूप से इस संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है कि उसका अपने पिता के साथ कितना घनिष्ठ संतानीय संबंध है। उसे उन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है।

गॉस्पेल का उद्देश्य दृढ़ता से इंजीलवादी है, हालांकि इसमें व्यापक रुचि भी है। अन्य गॉस्पेल के इस संक्षिप्त विवरण से यह शुरुआत में ही स्पष्ट हो जाएगा, इससे पहले कि हम ल्यूक की शिक्षाओं को अधिक विस्तार से प्रकट करें, कि मुक्ति का विषय और मुक्ति के प्रदाता के रूप में यीशु ल्यूक की एक विशिष्ट विशेषता है। यीशु दुनिया में जो करने और मनुष्यों को देने के लिए आए थे उसकी सकारात्मक गुणवत्ता पर जोर अधिक है और ल्यूक इसे व्यक्त करने के लिए जिस शब्दावली का उपयोग करता है वह अन्य सुसमाचारों में इतनी स्पष्ट नहीं है।

साथ ही यह भी स्पष्ट है कि ल्यूक का उद्देश्य मूलतः अन्य सुसमाचारों से भिन्न नहीं है। प्रत्येक सुसमाचार सुसमाचार प्रचारात्मक है। उनमें से प्रत्येक यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत करने के लिए चिंतित है।

लेकिन जहाँ मार्क में मसीह के व्यक्तित्व पर, मत्ती में यीशु की शिक्षा पर और यूहन्ना में उसमें अनन्त जीवन के प्रकटीकरण पर ज़ोर दिया गया है, वहीं लूका का ज़ोर उद्धार के आशीर्वाद पर है जो वह लाता है। इसलिए, सामान्य शब्दों में, लूका का दृष्टिकोण अन्य सुसमाचार प्रचारकों के दृष्टिकोण से मौलिक रूप से भिन्न नहीं है। सभी व्यापक अर्थों में उद्धार से चिंतित हैं।

न ही ल्यूक अपनी शब्दावली में पूरी तरह से एक नवप्रवर्तक है। मोक्ष की अवधारणा नए नियम की शिक्षा के लिए मौलिक है। 1 थिस्सलुनीकियों का पत्र नए नियम में सबसे पुराने लेखों में से एक है और कई विद्वान इसे पॉल का सबसे पुराना मौजूदा पत्र मानते हैं।

हालाँकि, अगर यह पॉल का सबसे पहला लेखन नहीं है, तो हमारी राय में, गैलाटियन शायद इससे पहले के थे; इसकी तिथि प्रारंभिक चर्च में मुक्ति की शब्दावली के युग की स्थापना के हमारे वर्तमान उद्देश्य के लिए इसे महत्वपूर्ण बनाती है। यहां, हम पॉल को गैर-यहूदियों के बचाए जाने के बारे में इस तरह से बोलते हुए पाते हैं जो इंगित करता है कि यह ईसाई रूपांतरण के लिए एक वर्तमान शब्द था। 1 थिस्सलुनीकियों 2:16. वही शब्दावली उसके सभी पत्रों में पुनः प्रकट होती है, केवल गैलाटियन और कुलुस्सियों में अनुपस्थित है।

नए नियम के अन्य लेखों में से, केवल 2 और 3 जॉन समूह शब्द का उपयोग करने में विफल रहते हैं। इससे न केवल पता चलता है कि यह शब्दावली जल्दी उत्पन्न हुई बल्कि यह पूरे चर्च में व्यापक थी। हम और भी पीछे जा सकते हैं।

यह मानने का अच्छा कारण है कि रोमियों 10:9 में पौलुस एक मौजूदा सूत्र का उपयोग कर रहा है। यदि आप अपने होठों से स्वीकार करते हैं कि यीशु प्रभु है और अपने दिल में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया है, तो आप बच जाएंगे। यहाँ निस्संदेह विश्वास की एक आदिम स्वीकारोक्ति को उद्धृत किया जा रहा है।

हम यह भी जानते हैं कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:3 में सबसे पहले प्रचार के सारांश की प्रस्तावना लिखी है और उसके बाद टिप्पणी की है कि इसी सुसमाचार के द्वारा मनुष्य का उद्धार होता है। पद 2. इससे पता चलता है कि उसके लिए सुसमाचार के प्रारंभिक सारांश उद्धार पाने के विचार से जुड़े थे। वादा किया गया उद्धारकर्ता।

यदि जक्कई की कहानी यरूशलेम में प्रवेश से पहले यीशु के मंत्रालय और जुनून की ओर ले जाने वाली घटनाओं का चरमोत्कर्ष बनाती है, तो प्रारंभिक दृश्य जो इस प्रकार के लिए पैटर्न निर्धारित करता है, वह नासरत के आराधनालय में यीशु का उपदेश है, ल्यूक 4 : 16-30. आमतौर पर यह माना जाता है कि यहां दर्ज की गई घटना मार्क 6:1-6 के समान है और ल्यूक ने मंत्रालय के अपने विवरण के लिए इसके प्रोग्रामेटिक चरित्र के कारण इसे कथा में आगे लाया है। कुछ लोग आगे बढ़ेंगे और इस बिंदु पर कथा को बड़े पैमाने पर मार्क में कहानी के ल्यूक के स्वयं के संशोधन के कारण मानेंगे। यदि ये दो बिंदु सही हैं, तो अपने वर्तमान स्वरूप में घटना स्पष्ट रूप से यह इंगित करने में बहुत महत्वपूर्ण है कि ल्यूक अपने पाठकों से मंत्रालय की कहानी को किस प्रकार देखना चाहता था।

हालाँकि, किसी भी धारणा को बिना सवाल किए नहीं छोड़ा जा सकता। कहानी में परंपरा और संपादन का विश्लेषण बहुत विवादित है, लेकिन कई विद्वान इस बात से सहमत होंगे कि मार्क के अलावा किसी अन्य स्रोत का उपयोग कहानी के कुछ या सभी हिस्सों के लिए किया गया है। इसके अलावा, एच. शूरमैन ने एक वैकल्पिक स्रोत के अस्तित्व के लिए एक मामला प्रस्तुत किया है जो बताता है कि यीशु की सेवकाई कैसे शुरू हुई।

मैथ्यू और ल्यूक दोनों द्वारा इस्तेमाल किए गए, इसमें कम से कम ल्यूक 4:14-16 शामिल थे और मंत्रालय की शुरुआत में नासरत की यात्रा की स्थापना की। यदि ये सुझाव सही हैं, तो इसका मतलब यह है कि यह तर्क देने के लिए मामले का एक मजबूत हिस्सा कि ल्यूक ने मंत्रालय के पैटर्न को निर्धारित करने के लिए खुद इस दृश्य का निर्माण किया था, समर्थन से प्राप्त होता है। फिर भी, यह अभी भी सच है कि ल्यूक ने किसी अन्य के बजाय मंत्रालय की शुरुआत की इस विशेष रिपोर्ट का उपयोग करना चुना, और इसलिए, उसकी नज़र में इसका कुछ महत्व रहा होगा।

हम इस दृष्टिकोण से इसकी जांच कर सकते हैं। कहानी का आरंभिक भाग बताता है कि कैसे यीशु आराधनालय सेवा में भविष्यवक्ताओं से पाठ पढ़ने के लिए खड़े हुए, और उन्होंने यशायाह

61:1-2 से पढ़ा, और फिर अपने साथियों को यह घोषणा करके आश्चर्यचकित कर दिया, उद्घरण, आज यह शास्त्र आपके सुनने में पूरा हुआ है, समापन, उद्घरण। कहानी के इस भाग से हम तुरंत चिंतित हैं।

एक, यहाँ ध्यान देने वाली पहली बात यह है कि यीशु पुराने नियम से उद्घरण देते हैं और उसकी पूर्ति के संदर्भ में बोलते हैं। उद्धृत किया गया अंश पैगंबर द्वारा प्रथम व्यक्ति में बोला गया था और इसलिए, जाहिर तौर पर उनके अपने मिशन की भावना को संदर्भित करता है। हालाँकि, वक्ता को यहोवा के सेवक के साथ पहचानना भी संभव होगा, जो भविष्यवाणी के तुरंत पहले के अध्यायों में बहुत प्रमुखता से दर्शाया गया है।

किसी भी मामले में, इस अंश को यहाँ भविष्यवाणी के अर्थ में भविष्यसूचक माना जाता है, और दावा किया जाता है कि यह अंश स्वयं यीशु में पूरा हुआ है। भविष्यवाणी में उनके व्यक्तित्व और कार्य का वर्णन किया गया है। इसका मतलब है कि यीशु की गतिविधि को उचित रूप से युगांतशास्त्रीय माना जा सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, उसकी गतिविधि को कुछ ऐसा माना जाता है जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम में भविष्य में होने वाली थी। और चूँकि कई सौ वर्षों की अवधि ने भविष्यवाणी को अंत के समय से अलग कर दिया, भविष्यवाणी को, क्षमा करें, पूर्ति से अलग कर दिया, यह निश्चित है कि भविष्यवाणी को अंत के समय के संदर्भ में माना जाता था ताकि यीशु के प्रकट होने को अंत समय की घटना के रूप में देखा जा सके। यह एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है।

इसका मतलब यह है कि यीशु के मंत्रालय को शब्द के सख्त अर्थ में भी एक युगांतकारी घटना माना जाता है। इसकी पुष्टि ल्यूक के अन्य अंशों के साक्ष्य से होती है। हम उस जन्म कथा को याद कर सकते हैं जिसमें जॉन बैपटिस्ट को एलियाह के आने की पुराने नियम की भविष्यवाणी से लिए गए शब्दों में, प्रभु के लिए रास्ता तैयार करने वाला माना जाता है।

यीशु को स्वयं दाऊद के घराने का वादा किया हुआ मसीहा कहा जाता है। इन बिंदुओं को ल्यूक 7:18 में लिया गया है, और निम्नलिखित में, जहाँ जॉन द बैपटिस्ट के काम को समझाने के लिए मलाकी 3:1 को उद्धृत किया गया है, और यीशु के मंत्रालय को यशायाह 29:18, 35 के वाक्यांशों की एक श्रृंखला में वर्णित किया गया है: 3, और 61:1. यहाँ फिर से, उद्धृत अंश वे हैं जिनके लिए अंत के समय में पूर्ति की उम्मीद की गई थी। इसी प्रकार, लूका 10:23 और 24 में, यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं, "धन्य हैं वे आंखें जो जो कुछ तुम देखते हो वही देखती हैं, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वक्ता और राजा यह चाहते हैं कि जो कुछ तुम देखते हो वही देखें, परन्तु न देखा, और जो कुछ तुम सुनते हो वही सुनो, और नहीं सुना।"

हम अपने अगले घंटे में ल्यूक, इतिहासकार और धर्मशास्त्री में हॉवर्ड मार्शल के अच्छे संदेश को जारी रखेंगे।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 9 है, रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च इन ल्यूक, द न्यू टेस्टामेंट पीपल ऑफ गॉड, भाग 2, और आई. हॉवर्ड मार्शल,

टू सेव द लॉस्ट।